क्या छापना है

- **एक बार, अपने लिए:** run.pdf, 1 पेज। सत्र चलाते समय इसे हाथ में रखें।
- **हर लड़की के लिए एक प्रति:** sheets.pdf, 3 पेज। पन्ना क और पन्ना ख। यानी हर लड़की के लिए 2 पेज। पन्ना ग वैकल्पिक है।
- **इन्हें छापना ज़रूरी नहीं:** इस मार्गदर्शिका के पेज 6 से 9, यानी उत्तर। सत्र इनके बिना भी चलता है।

मार्गदर्शिका, बड़ा, छोटा, बराबर

समूह: 4 से 24 लड़कियाँ · सतत विकास लक्ष्य 4, 5 · हिन्दी संस्करण · प्रकाशित · AI translation from English master, Machine translation; English master by Nameet Potnis

इस संस्करण के बारे में। इस संस्करण का अनुवाद अंग्रेज़ी पैक से एआई ने किया है। इसमें ग़लतियाँ हो सकती हैं। अगर कुछ ठीक करना हो या किसी बात को अलग ढंग से कहना हो, तो hello@potnis.org पर लिखें — हम इसे सुधार देंगे।

About this edition. This edition was translated from the English pack with AI. It may contain mistakes. Write to hello@potnis.org if something should be fixed or said differently — we will update it.

कमरे में जाने से पहले

- **हम चीज़ों की तुलना करते हैं, लोगों की कभी नहीं।** दो बच्चों के क़द, हाथ, जूते या बस्ते पास-पास रखकर कभी नहीं देखे जाते।
- हर लड़की के लिए तीन-चार चीज़ें जुटाएँ, जिनके आकार में बहुत फ़र्क़ हो।
- ऐसी कोई चीज़ नहीं जो आपके अँगूठे और पहली उँगली से बने छल्ले में समा जाए। डंडियाँ आपकी कोहनी से कलाई तक की लंबाई से छोटी और बिना नोक की हों, काँच कुछ नहीं।
- पन्ना ग सिर्फ़ 60 मिनट के सत्र के लिए है। 30 या 45 मिनट के लिए पन्ना क और पन्ना ख छापें।

इसे एक बार घर पर पढ़ लें। कमरे में आपको सिर्फ़ सत्र योजना चाहिए। यहाँ जहाँ भी "आप" लिखा है, उसका मतलब है जो भी सत्र चला रहा हो: शिक्षक, स्वयंसेवक, बड़ी बहन। पन्नों पर "दीदी" लिखा है; सत्र कोई और चला रहा हो तो बच्चियों से वही नाम कहें जिससे वे आपको बुलाती हैं।

यह किसके लिए है

- **4 से 7 साल की उम्र के लिए।** वे लड़कियाँ जो एक पत्थर उठाकर उसे देख सकती हैं। इस सत्र में कहीं भी पढ़ने, लिखने या गिनने की ज़रूरत नहीं है। जो लड़की बीस तक नहीं गिन पाती, वह भी इसका हर हिस्सा कर सकती है।
- **संख्याएँ।** यह संख्याओं की सीढ़ी का पहला पायदान है, और गिनती से भी नीचे है। किसी संख्या का कोई मतलब बने, इससे पहले लड़की को यह दिखना चाहिए कि दो चीज़ें एक जैसी नहीं हैं, और उसके पास यह कहने के शब्द होने चाहिए कि फ़र्क़ क्या है।
- **समूह का आकार।** 4 से 24 लड़कियाँ।

- **एक ही कमरे में अलग-अलग स्तर।** चार साल की और सात साल की लड़की वही चीज़ें और वही पन्ने लेती हैं; मुश्किल बढ़ाने की जगह गतिविधि के भीतर ही है। जो लड़की अभी शुरू कर रही है, वह आकार में बहुत अलग दो चीज़ें लेती है और एक शब्द बोलती है। जो आगे है, वह तीन या चार चीज़ें सबसे छोटे से सबसे बड़े के क्रम में रखती है, अपने हाथ के बराबर कोई चीज़ ढूँढ़ती है, और बताती है कि क्यों। किसी को अलग पन्ना नहीं मिलता।

आपको क्या चाहिए

- हर लड़की के लिए तीन-चार मिली-जुटाई चीज़ें, साफ़ अलग-अलग आकार की: हथेली भर के पत्थर, पत्ते, अलग-अलग लंबाई में तोड़ी डंडियाँ, बोतल के बड़े ढक्कन, कप, मोड़े हुए काग़ज़ के चौकोर टुकड़े, बीज की बड़ी फलियाँ
- हर लड़की के लिए एक अभ्यास पन्ना क और एक अभ्यास पन्ना ख, और पन्ना ग भी, सिर्फ़ तब जब सत्र 60 मिनट का हो
- हर लड़की के लिए एक पेंसिल, या दो के बीच एक
- **मुफ़्त और वैकल्पिक:** एक समतल जगह, जो मेज़, चटाई, कपड़ा या झाड़ी हुई ज़मीन हो सकती है
- **यहाँ किसी चीज़ पर पैसा नहीं लगता।**

हो सके तो चीज़ें सत्र से पहले जुटा लें। न हो सके, तो पहला हिस्सा ही जुटाने का हिस्सा बन जाता है और सत्र फिर भी चलता है। ऐसे आकार चुनें जिनमें बहुत फ़र्क़ हो। दो लगभग एक जैसे पत्थर एक मुश्किल सवाल हैं, और उनकी जगह सत्र के बीच में है, शुरू में नहीं।

सत्र इस तरह क्यों बना है

हम चीज़ों की तुलना करते हैं, लोगों की कभी नहीं। पूरे सत्र में यही एक नियम थामे रखना है, और इसे पहले ही मिनट में समूह से ज़ोर से कह देना अच्छा है: "आज हम पत्थरों, डंडियों और कपों की तुलना कर रहे हैं। एक-दूसरे की नहीं।"

बड़े और छोटे का सत्र एक मिनट में ऐसा कमरा बन सकता है जहाँ बच्चों को क़द या डील-डौल से ऊपर-नीचे रखा जाने लगे। इसलिए इस पैक में कहीं भी किसी लड़की से यह नहीं कहा गया कि वह दूसरी लड़की से पीठ मिलाकर खड़ी हो, पास वाली से हाथ मिलाकर देखे, दो अलग बच्चों के जूते मिलाकर देखे, या बताए कि सबसे लंबी कौन है। अपने हाथ की तुलना पत्थर से करना ठीक है, क्योंकि हाथ उसका अपना है और पत्थर वह चीज़ है जिसे हाथ से मिलाकर देखा जा रहा है। अपने हाथ की तुलना दूसरी लड़की के हाथ से करना ठीक नहीं है, और यह कोई छोटा फ़र्क़ नहीं है।

अगर बच्चों की तुलना फिर भी शुरू हो जाए, और कुछ कमरों में होगी ही, तो किसी को डाँटें नहीं। एक वाक्य कहें, "हम चीज़ों की तुलना करते हैं, लोगों की नहीं", जिन लड़कियों ने शुरू किया उनके सामने दो चीज़ें रखें, और सीधे आगे बढ़ जाएँ। जो चीज़ें किसी बच्चे की अपनी हैं, उन्हें इससे पूरी तरह बाहर रखें। जूता, बस्ता या पानी की बोतल उसी पल आम चीज़ नहीं रहती जब कमरे को पता चल जाए कि वह किसकी है, इसलिए उसकी जगह पत्थर लें।

शब्द ही पढ़ाई हैं। बड़ा, छोटा, बराबर। जाने से पहले हर लड़की इनमें से हर शब्द कई बार ज़ोर से बोले। जब वह जवाब की ओर इशारा करे या कहे "वह वाला", तो फिर पूछें: "शब्द बोलो।" ये शब्द ख़ुद भी उससे कहीं ज़्यादा बार बोलें जितना ज़रूरी लगे, क्योंकि कमरे की कुछ बच्चियों के लिए इन शब्दों को पहली बार कोई काम मिला है।

पहले सिरे एक लाइन पर, फिर देखना। दो चीज़ें पास-पास, नीचे के सिरे एक लाइन पर, फिर देखना। यह आदत ही सत्र का पूरा मक़सद है, और यही आगे चलकर उसे धोखे से बचाती है। जो चीज़ पास हो, या ऊँचाई पर रखी हो, या लेटी हुई हो, वह जितनी है

उससे बड़ी दिखती है। दोनों को साथ लाकर सिरे मिला देने से यह धोखा हट जाता है। इसे धीरे-धीरे, दो बार करके दिखाएँ, और जिस भी लड़की के पास घुटनों के बल बैठें, उसके पास यही करते रहें।

नापने से पहले सीधी तुलना आती है। आज कोई पैमाना, डोरी या फ़ीता नहीं लेता, और कोई कुछ गिनता नहीं। दो चीज़ें साथ रखकर देखना अपने आप में पूरा तरीक़ा है, और नापने के सारे तरीक़े इसी पर खड़े हैं। अगर सात साल की कोई लड़की डोरी की ओर हाथ बढ़ाए, तो उसे देखकर जवाब दे लेने के बाद डोरी लेने दें, देखने की जगह नहीं।

"बराबर" सबसे मुश्किल है। बड़ा और छोटा जल्दी आ जाते हैं। बराबर में देर लगती है, क्योंकि दो चीज़ें शायद ही कभी ठीक एक जैसी होती हैं, और चार साल की बच्ची अक्सर अड़ जाएगी कि एक बड़ा है। उसे दो ऐसी चीज़ें दें जो सचमुच मिलती हों, जैसे दो ढक्कन या एक ही मोड़े हुए काग़ज़ से फाड़े दो चौकोर टुकड़े, और उसकी आँखों के सामने उनके सिरे मिलाएँ। "लगभग बराबर" को सही जवाब मानें, क्योंकि वह सही है।

तीन चीज़ों से मुश्किल बढ़ती है। तीन को क्रम में रखना दो को रखने से सिर्फ़ ज़्यादा कठिन नहीं, एक अलग काम है: उसे दो बार तुलना करनी होती है, और दूसरा जवाब निकालते समय पहला याद रखना होता है। कुछ लड़कियाँ तीन चीज़ें बिना किसी क्रम के रख देंगी और ख़ुश रहेंगी। उससे कहें कि सबसे छोटा दिखाए, उसे हटा दें, और बची दो में से फिर सबसे छोटा माँगें। इससे क़तार बनती है, और उसे आपको नहीं बनाना पड़ता।

शरीर हिल सकता है, और पैर काम के हैं। खोज वाला हिस्सा पूरे कमरे को खड़ा करता है और हर लड़की को अपने पत्थर से बड़ा कुछ और उससे छोटा कुछ ढूँढ़ने भेजता है। किसी चीज़ तक चलकर जाना, उसे उठाना और वापस लाना, चार साल की बच्ची इसी तरह एक बात को मन में टिकाती है।

सबको शामिल करना

जो लड़की अभी पढ़ नहीं पाती। यह सत्र उससे कुछ भी पढ़ने को नहीं कहता। पन्नों के शब्द आप ज़ोर से पढ़ें, एक बार, हर शब्द बोलते हुए उस पर उँगली रखकर, और वह उस शब्द पर निशान लगाती है जो उसका जवाब है। वह जो कुछ भी बनाती है वह एक चित्र है, एक निशान, उँगली का इशारा या बोला हुआ शब्द। पन्ना देते समय ही उस पर उसका नाम लिख दें, इससे पहले कि उसे कहना पड़े। तीनों शब्द ज़ोर से बोलना ही इस पैक का पूरा हुनर है, और वह इसे कमरे की किसी भी लड़की जितनी अच्छी तरह कर सकती है।

जो लड़की देर से आती है। दरवाज़े पर ही उसके हाथ में दो चीज़ें दें और एक वाक्य कहें: "इन्हें पास-पास रखो, नीचे के सिरे एक लाइन पर। कौन-सा बड़ा है?" पूरा काम यही है और इसके लिए पहले के किसी क़दम की ज़रूरत नहीं। कमरा जिस हिस्से में है, वह उसी में जुड़ जाती है। जो छूट गया उसे दोहराकर न बताएँ, और सबके सामने उससे यह न पूछें कि वह कहाँ थी।

कमरे में लड़के। लड़के वही गतिविधि उन्हीं चीज़ों और उन्हीं पन्नों से करते हैं। दो बातें सत्र को लड़कियों पर टिकाए रखती हैं, और दोनों में किसी को बाहर नहीं भेजा जाता: समापन के घेरे में लड़कियाँ पहले अपनी चीज़ें उठाकर अपना वाक्य कहती हैं, और आप ध्यान रखें कि सबसे तेज़ आवाज़ वाला अपने पास बैठे बच्चे की जगह जवाब न दे। चीज़ों पर भी नज़र रखें। अगर किसी एक बच्चे ने सबसे अच्छी चीज़ें अपने ढेर में जमा कर ली हैं, तो बिना कुछ कहे उन्हें फिर बाँट दें और उसे बची चीज़ें उठाकर ले चलने का काम दें।

अगर कुछ बिगड़ जाए

वह चीज़ें जहाँ पड़ी हैं वहीं से जवाब देती है। वह कहती है कि दूर वाला पत्थर छोटा है, या निचली सीढ़ी पर रखा पत्थर छोटा है; वह चीज़ों को नहीं, सामने के नज़ारे को पढ़ रही है। सबसे ज़्यादा यही होता है, और यह लापरवाही नहीं है, आँखें ऐसे ही काम करती हैं।

उससे यह न कहें कि वह ग़लत है। दोनों चीज़ें उठाएँ, उसके सामने साथ रखें, नीचे के सिरे एक लाइन पर, और फिर पूछें। उसे अपना जवाब बदलने दें, और आप उस पर कुछ न कहें। फिर दोनों चीज़ें किसी दूसरी लड़की को दें और सिरे उसे ख़ुद मिलाने दें।

हर चीज़ "बड़ा" है। कोई लड़की हर चीज़ के लिए एक ही शब्द बोलती है, या हर सवाल का जवाब "बड़ा" देती है, छोटी चीज़ के लिए भी। उसे दो ऐसी चीज़ें दें जिनके आकार में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ हो, एक नन्ही-सी और एक जो उसकी हथेली भर दे, और सिर्फ़ छोटा माँगें: "मुझे छोटा वाला दो।" उससे कोई चीज़ हाथ में माँगना, उससे शब्द बुलवाने से आसान है, और इससे दिख जाता है कि वह क्या जानती है। जब वह सही चीज़ दे, तो उसके लिए वह शब्द आप बोलें, फिर उससे कहें कि वह दोहराए। कई बारियों में धीरे-धीरे ऐसी जोड़ी तक पहुँचें जिसके आकार पास-पास हों।

इसे अपने हिसाब से ढालना

- ज़मीन जो दे, वही लें। हथेली भर के पत्थर, पत्ते, डंडियाँ, बड़े ढक्कन, कप, मोड़ा हुआ काग़ज़ और बीज की फलियाँ, सब चलते हैं, और इन्हें मिलाना भी ठीक है। अलग-अलग चीज़ से बनी दो चीज़ों की भी तुलना हो जाती है।
- बड़ा, छोटा और बराबर के लिए वही शब्द बोलें जो आपकी लड़कियाँ घर पर बोलती हैं। अगर वे हिन्दी सीख रही हैं तो हिन्दी के शब्द भी बोलें, पर किसी लड़की से जवाब देने के लिए हिन्दी शब्द का इंतज़ार कभी न करवाएँ।
- जहाँ हवा चलती हो या ज़मीन ढलान वाली हो, वहाँ पत्तों की जगह मोड़े हुए काग़ज़ के चौकोर टुकड़े और पत्थर लें।
- चार का समूह पूरा सत्र एक ही घेरे में कर सकता है, चीज़ें बीच में रखकर।
- अगर कोई लड़की भारी और हल्का, या लंबा और छोटा मिलाकर देखना चाहे, तो उसने अगला पायदान ढूँढ़ लिया है। उसे करने दें, और पन्नों को आकार तक ही रखें।

इसे छोटा या लंबा चलाना

30 मिनट। 0 से 4 दो पत्थर, दो शब्द; 4 से 11 पास-पास, सिरे एक लाइन पर; 11 से 18 खोज; 18 से 25 तीन की क़तार; 25 से 30 उठाकर दिखाना और बोलना। नए समूह के लिए यही असली रूप है और इसमें कुछ भी काटा नहीं गया है। इसमें दूसरी खोज और धीमा समापन घेरा छूट जाता है, इसलिए हो सकता है किसी चुप रहने वाली लड़की को कुछ उठाकर अपना वाक्य कहने की बारी न मिले। अगर कोई चुप रहने वाली लड़की है, तो घेरा उसी से शुरू करें।

45 मिनट। 0 से 6 दो पत्थर, दो शब्द; 6 से 17 पास-पास, सिरे एक लाइन पर; 17 से 26 खोज; 26 से 38 तीन की क़तार; 38 से 45 उठाकर दिखाना और बोलना। बढ़े हुए मिनट शब्द बोलने में जाते हैं, नए काम में नहीं। हर लड़की से कम से कम तीन बार पूछा जाता है "कौन-सा बड़ा है", और तीन की क़तार का दूसरा दौर तीन नई चीज़ों से होता है। पन्ना ग 60 मिनट वाले रूप के लिए ही रहता है।

60 मिनट। 0 से 8 दो पत्थर, दो शब्द; 8 से 22 पास-पास, सिरे एक लाइन पर; 22 से 34 खोज; 34 से 50 तीन की क़तार; 50 से 60 उठाकर दिखाना और बोलना। यह लंबाई सिर्फ़ ऐसे जमे हुए समूह के साथ लें जो पहले से आधा घंटा बैठ लेता है। बढ़े हुए समय में पन्ना ग जुड़ता है, अपने हाथ के बराबर कोई चीज़ ढूँढ़ने की दूसरी खोज, और पन्ना ग के पीछे चार की क़तार। पन्ना ग ही अकेला अतिरिक्त पेज है, और वह वही काम है जो उसके अपने हाथ से मिलाकर किया जाता है, क्योंकि इस उम्र में लंबे सत्र का मतलब है ज़्यादा छूना-उठाना और ज़्यादा बोलना, नई सामग्री नहीं।

समापन, हर रूप में। घेरे में बारी-बारी चलें। हर लड़की अपनी दो चीज़ें उठाकर एक वाक्य कहती है: "यह बड़ा है", या "ये दोनों बराबर हैं"। पिछली लड़की वाला ही वाक्य कहना ठीक है, और उस पर कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। फिर ख़ुद दो चीज़ें उठाएँ, समूह

से पूछें कि कौन-सा बड़ा है, और सबको एक आवाज़ में साथ जवाब देने दें, ताकि हर कोई यह शब्द बोलकर बाहर जाए।

सुरक्षा का ध्यान

इस सत्र में आकारों में बहुत फ़र्क़ है, यानी कुछ चीज़ें छोटी होंगी। मुँह में कुछ नहीं जाता। कुछ भी बाँटने से पहले जाँच लें कि वह बच्चे के मुँह में न समा सके: जो चीज़ आपके अँगूठे और पहली उँगली से बने छल्ले में समा जाए, वह इस कमरे के लिए बहुत छोटी है। बीज, मोती, सिक्के और बोतल के छोटे ढक्कन नहीं चलेंगे। जो बाँटा, उसे आख़िर में गिनकर वापस लें। डंडियाँ आपकी कोहनी से कलाई तक की लंबाई से छोटी और बिना नोक की, पत्थर जो हथेली भर दें, कप जो काँच के न हों। कमरे की सबसे छोटी चीज़ भी इतनी बड़ी हो कि निगली न जा सके।

CC BY 4.0 · Potnis Family / potnis.org. अंग्रेज़ी में लेखन और संपादन: Nameet Potnis. यह हिन्दी संस्करण अंग्रेज़ी से एआई का किया अनुवाद है; किसी इंसान ने इसे हिन्दी में जाँचा नहीं है। श्रेय देकर कॉपी करें, छापें, ढालें और बाँटें।

उत्तर और संचालन के संकेत

उत्तर और क्या कहें, बड़ा, छोटा, बराबर

इस संस्करण के बारे में। इस संस्करण का अनुवाद अंग्रेज़ी पैक से एआई ने किया है। इसमें ग़लतियाँ हो सकती हैं। अगर कुछ ठीक करना हो या किसी बात को अलग ढंग से कहना हो, तो hello@potnis.org पर लिखें — हम इसे सुधार देंगे।

About this edition. This edition was translated from the English pack with AI. It may contain mistakes. Write to hello@potnis.org if something should be fixed or said differently — we will update it.

उत्तर

इस पैक में कोई उत्तर-पन्ना नहीं है, क्योंकि उत्तर इस पर टिके हैं कि हर लड़की के हाथ में कौन-सी चीज़ें हैं, और क्योंकि आज वह जो कुछ भी करती है, लगभग सब बोला या बनाया जाता है। आपको शब्द सुनना है, और यह देखना है कि वह सिरे मिलाती है या नहीं।

एक बात थामे रखने लायक़ है: तुलना तब सही है जब वह उसके सामने रखी दो असली चीज़ों से मेल खाती है, भले ही उसका चित्र दोनों में से किसी जैसा न दिखे। तुलना को परखें, चित्र को कभी नहीं।

पन्ना तब पूरा है जब:

पन्ना	पूरा तब, जब
क	हर डिब्बे में कुछ बना हो, बड़ा वाला बड़े डिब्बे में हो, और दो में से एक शब्द पर निशान लगा हो। पेंसिल फेरने वाली लाइन ख़ाली रह सकती है
ख	तीन चीज़ें किसी क्रम में बनी हों, और क्रम उस क़तार से मिलता हो जो उसने मेज़ पर बनाई
ग	हाथ के चारों ओर लाइन खिंची हो, और तीन में से एक शब्द पर निशान लगा हो। यह सिर्फ़ 60 मिनट की घड़ी के लिए है, और 30 या 45 में इसकी उम्मीद नहीं की जाती

चीज़ बदलें तो ज़ोर से बता दें। पत्थर, पत्ते, डंडियाँ, ढक्कन, कप और मोड़ा हुआ काग़ज़, सब एक ही काम करते हैं। जहाँ आप पढ़ाते हों वहाँ की ज़मीन पर जो मिले वह लें, और बड़ा, छोटा और बराबर के लिए वही शब्द बोलें जो आपकी लड़कियाँ घर पर बोलती हैं।

आपको क्या दिख सकता है

पन्ने पर क्या है	आगे क्या दें
पन्ना क के दोनों डिब्बों में लगभग एक ही आकार के चित्र हैं, जबकि दोनों असली चीज़ें साफ़ अलग हैं	पन्ने पर कुछ बदलने की ज़रूरत नहीं। दोनों असली चीज़ें उसके सामने रखें, सिरे मिलाकर, और पूछें कि कौन-सा बड़ा है। काम शब्द हैं, चित्र नहीं
पन्ना क पूरा है, और बराबर पर निशान लगा है जबकि दोनों चीज़ें एक जैसी नहीं हैं	उसे दो ऐसी चीज़ें दें जो सचमुच मिलती हों, उसकी आँखों के सामने उनके सिरे मिलाएँ, और उसे दूसरे पन्ने पर या पहले के पीछे निशान लगाने दें। तीनों शब्दों में बराबर सबसे आख़िर में आता है
पन्ना ख उसी क्रम में बना है जो उसने रखा था, और पन्ना क पूरा है	पन्ना ग, फिर उसके पीछे चार की क़तार। फिर उससे कहें कि ऐसा कुछ ढूँढ़े जो उसकी क़तार की हर चीज़ से बड़ा हो
पन्ना ख पर तीन चीज़ें बिना किसी क्रम के बनी हैं	उसके साथ सबसे छोटा हटाएँ, फिर बची दो में से सबसे छोटा माँगें। चीज़ों से दो बार बनाना चित्र सुधारने से बेहतर है
पन्ने पर लगभग कुछ नहीं है, और वह पूरे सत्र में बोलकर जवाब देती रही	उसने पैक कर लिया है। वह चाहे तो उसका अपना कोई शब्द उसके डिब्बे के नीचे लिख दें, और बाक़ी रहने दें

CC BY 4.0 · Potnis Family / potnis.org

जहाँ बात अटकती है

क्या होता है	क्या कहें या करें
वह मेज़ के उस पार से जवाब देती है, जहाँ दूर वाली चीज़ छोटी दिखती है	दोनों उसके पास लाएँ, नीचे के सिरे एक लाइन पर, फिर पूछें। उसे जवाब बदलने दें, और आप उस पर कुछ न कहें
वह शब्द बोलने की जगह इशारा करती है या कहती है "वह वाला"	"मेरे लिए शब्द बोलो।" रुकें। कुछ न आए तो शब्द ख़ुद बोलें और उससे कहें कि दोहराए
हर एक चीज़ "बड़ा" है	उससे एक चीज़ हाथ में माँगें: "मुझे छोटा वाला दो।" देना बोलने से आसान है। फिर उसके लिए शब्द बोलें और उससे कहें कि दोहराए
वह मानती ही नहीं कि दो चीज़ें बराबर हैं	दो ढक्कन, या एक ही मोड़े हुए काग़ज़ से फाड़े दो चौकोर टुकड़े, उसके सामने सिरे मिलाकर। "लगभग बराबर" मान लें, क्योंकि वह सच है
वह तीन चीज़ों को नीचे के सिरों की जगह ऊपर के सिरों से मिलाकर रखती है	उसके साथ सबको खिसकाकर नीचे एक लाइन पर लाएँ, फिर पूछें। करके दिखाएँ, समझाएँ नहीं
दो लड़कियाँ अपनी, या अपने हाथों की, या अपने जूतों की तुलना करने लगती हैं	"हम चीज़ों की तुलना करते हैं, लोगों की नहीं।" उनके सामने दो चीज़ें रखें और सीधे आगे बढ़ जाएँ। इस पर और कुछ न कहें
वह नापने के लिए डोरी, डंडी या पैमाना लेना चाहती है	उससे कहें कि पहले देखकर जवाब दे, फिर उसे अपने तरीक़े से जाँचने दें। नापना अगला पायदान है और उसने उसे ढूँढ़ लिया है
वह कहती है कि उसका चित्र ग़लत है या भद्दा है	"यह तुम्हारा पत्थर है, और ऐसा किसी और के पास नहीं है।" फिर उससे पूछें कि कौन-सा बड़ा है, और उसी जवाब को असली जवाब रहने दें
वह अपना नाम नहीं लिख पाती	पन्ना देते समय ही आप लिख दें, इससे पहले कि उसे कहना पड़े

कहें "दोनों को साथ रखो और देखो", कभी नहीं "ठीक से देखो"। कहें "शब्द बोलो", कभी नहीं "यह तो तुम्हें आता है"। किसी एक लड़की का पन्ना कभी अच्छे नमूने की तरह उठाकर न दिखाएँ: समूह को कुछ दिखाना हो तो दो चीज़ें बीच में फ़र्श पर रखें और उनके सिरे ख़ुद मिलाएँ।

हम चीज़ों की तुलना करते हैं, लोगों की कभी नहीं। यह आप पर भी उतना ही लागू है जितना लड़कियों पर। किसी उदाहरण में बच्चे को चीज़ की तरह काम में न लें, बात समझाने के लिए बच्चों को क़द के हिसाब से क़तार में न खड़ा करें, और यह न कहें कि किस लड़की का हाथ सबसे बड़ा है, प्यार से भी नहीं। कोई न कोई पत्थर हमेशा होता है जिससे काम चल जाता है।

सत्र के बाद

चीज़ें किसी थैले या डिब्बे में रख लें ताकि संख्याओं का अगला सत्र बिना जुटाए शुरू हो, और कुछ ऐसी जोड़ियाँ रख लें जो सचमुच मिलती हों, क्योंकि जल्दी में सबसे मुश्किल से वही मिलती हैं। पन्ना क एक नज़र में बता देता है कि अगली बार किसके पास बैठना है: वे पन्ने देखें जिनमें बड़ा वाला छोटे डिब्बे में चला गया, और उस लड़की को ऐसी दो चीज़ों से शुरू कराएँ जिनके आकार में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ हो।

इस पैक में किसी चीज़ पर अंक नहीं दिए जाते, कुछ गिना नहीं जाता, कहीं भेजा नहीं जाता। अगला पायदान गिनती है, और जो लड़की तीन पत्थर क्रम में रख सकती है, वह उसके लिए तैयार है।

CC BY 4.0 · Potnis Family / potnis.org